International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 7, Issue 06, June 2020
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

सुविख्यात तबला वादक पं. नन्दन मेहता जी का जीवन परिचय एवं संगीत क्षेत्र में बहुमूल्य योगदान

लेखक :
मोनिका जैन
शोधार्थी
संगीत विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

सारांश

उत्तर भारतीय संगीत की परम्परा में **18वीं, 19वीं, 20वीं शताब्दी** में अनेक तबला वादक हुए, **प्रस्तुत शोध विषय** के अनुसार **20वीं शदी** के **सुविख्यात तबला वादक पं. नन्दन मेहता** जी का संगीत जगत में बहुमूल्य योगदान रहा है।पं. नन्दन मेहता जी ऐसे निःस्वार्थ संगीत सेवी थे, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन संगीत को समर्पित कर दिया था। विश्व विख्यात कलाकार स्व. पं. नन्दन मेहता जी भारतीय शास्त्रीय संगीत के चिरस्मरणीय कलाकार है। पं. भारतीय संगीत के विकास में अभूतपूर्व योगदान रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में सुविख्यात तबला वादक पं. नन्दन मेहता जी का जीवन परिचय एवं संगीत क्षेत्र में बहुमूल्य योगदान का अध्ययन किया गया है।

नन्दन मेहता जी का जन्म

हमारा भारत अनेक सभ्यता एवं संस्कृति से ओत–प्रोत है, जिसमें संगीत का अपना अलग स्थान है। भारतीय शास्त्रीय संगीत को प्राचीनतम धरोहर के रूप में माना जाता है। हमारी संस्कृति व संगीतकी गणना विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में की जाती है, जिसकी विशिष्टताएँ, विश्वभर को समय–समय पर प्रभावित करती रही है। धन्य है यह भारत भूमि, जिसने एक से बढ़कर एक तपस्वी अवतरित किया है।

जन्म एवं जीवन परिचय

संगीत साधकों ने समय–समय पर अपनी प्रतिभा, सृजनात्मक क्षमता, कठोर, संगीत साधना, निष्ठा एवं लगन से इसे समृद्ध व उन्नत बनाये रखा है। इस कड़ी में 21वीं सदी के प्रमुख तबला–वादक स्वर्गीय पं. नन्दन मेहता का नाम तबला गुरूओं में सदैव ही चिरस्मणीय है। बनारस घराने के प्रमाणिक तबला वादकों में इनका नाम सम्मान से लिया जाता है। कई उच्चकोटि के कलाकारों के साथ इन्होंने तबला संगत की है साथ ही एकल

© Associationof Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

वादन में अपनी विशिष्ट पहचान को स्थापित किया। इनकी मंचीय प्रस्तुतियां श्रोतागण पर अविस्मृत प्रभाव छोड़ती थी।

पं. नन्दन मेहता जी ऐसे निःस्वार्थ संगीत सेवी थे, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन संगीत को समर्पित कर दिया था। विश्व विख्यात कलाकार स्व. पं. नन्दन मेहता जी भारतीय शास्त्रीय संगीत के चिरमरणीय कलाकार है। पं. भारतीय संगीत के विकास में अभूतपूर्व योगदान रहा है।[1]

स्वर्गीय पं. नन्दन मेहता जी का जन्म 26 फरवरी 1942 को अहमदाबाद में मेहता परिवार में हुआ। प. नन्दन मेहता जी अहमदाबाद के एक भारतीय तबला वादक और संगीत शिक्षक थे, जो हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के बनारस घराने से ताल्लुक रखते थे। उन्होंने सप्तक स्कूल ऑफ म्यूजिक की स्थापना की और सन् 1980 में सप्तक वार्षिक संगीत समारोह की शुरुआत की। इन्होंने शैक्षणिक शिक्षा स्नातक तक की। संगीतिक शिक्षा सोलह वर्ष की आयु से प्रसिद्ध गुरू किशन महाराज से (बनारस बाज) प्राप्त की।

पं. नन्दन मेहता जी ऑल इंडिया रेडियो और दूरदर्शन के वरिष्ठ ए ग्रेड कलाकार थे, इनके प्रदर्शन के फलस्वरूप प्रशंसा करना नैसर्गिक स्थिति होती थी। इन्होंने देश भर में बड़े पैमाने पर अपनी कला का प्रदर्शन किया और आकाशवाणी कार्यक्रम के साथ–साथ आकाशवाणी राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भी भाग लिया। इन्होंने अपनी कर्मचारी चयन समिति, अहमदाबाद में ऐयर (AIR) की सेवा की और अपने संगीत ऑडिशन बोर्ड में भी कार्य किया। इनकी पत्नी श्रीमती मंजू मेहता जी एक सितार वादक थी एवं इनकी दो बेटियाँ, पूर्वी मेहता, एक सितार वादक और हेतल मेहता, एक तबला वादक हैं।

पं. नन्दन मेहता जी को मेवाती घराने की ओर से दो बार सन् 1997 एवं सन् 2002 में पं. जसराज द्वारा सम्मानित किया गया और उन्हें 'ताल रसिक वार' की उपाधि से सम्मानित किया गया। कुरुक्षेत्र में ''संकल्प'' केंद्रीय निकाय ने उन्हें वर्ष 1996 में 'संगीत ऋषि' की उपाधि से सम्मानित किया। कुमार क्लब शास्त्री ग्रुप अहमदाबाद ने उन्हें शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान करने के लिए सम्मानित किया। वर्ष 1988 में संगीत के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए उन्हें गुजरात संगीत नाटक अकादमी द्वारा प्रतिष्ठित 'गौरव पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। संगीत के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए उन्हें 'विश्व रंग – भूमि दिवस' पर सम्मानित भी किया गया।

पं. नन्दन मेहता का नाम तबला गुरूओं में सदैव ही चिरस्मणीय है। बनारस घराने के प्रमाणिक तबला वादकों में इनका नाम सम्मान से लिया जाता है। कई उच्चकोटि के कलाकारों के साथ इन्होंने तबला संगत की है साथ ही एकल वादन में अपनी विशिष्ट पहचान को स्थापित किया। इनकी मंचीय प्रस्तुतियां श्रोतागण पर अविस्मृत प्रभाव छोड़ती थी।[2]

पं. नन्दन मेहता जी ऐसे निःस्वार्थ संगीत सेवी थे, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन संगीत को समर्पित कर दिया था। विश्व विख्यात कलाकार स्व. पं. नन्दन मेहता जी

[1] जमुना प्रसाद पटेल, तबला–वादन की विस्तरशील रचनाएं, कनिष्ठ पब्लिशर्स नई, दिल्ली प्रथम संस्करण 2011 ।

[2] M-P- Sharma, How to play Tabla, Bam Bam" BETTER BOOK PANCH KULA FIRST Edi, 2007 ।

भारतीय शास्त्रीय संगीत के चिरमरणीय कलाकार है। पं. भारतीय संगीत के विकास में अभूतपूर्व योगदान रहा है।

धन्य है वे महान कलासाधक, जिन्होंने 'भगवत महिला' के अमृत का आस्वादन किया और समस्त विश्व को तृप्त किया। उनमें से पं. नन्दन मेहता जी संगीत के ऐसे समर्पित साधक थे, जिनका तबला वादन सुनकर रसिकजन अतृप्त ही रहे। इनका जन्म गुजरात प्रान्त के अहमदाबाद शहर के एक प्रसिद्ध समृद्धशाली वैभव पूर्ण परिवार में हुआ। आपके पिता यशोधर मेहता बहुरंगी प्रतिमा के धनी था। जो उच्च कोटी के वकील होने के साथ–साथ साहित्य व ज्योतिष विद्या की गहन जानकारी रखते थे और संगीतज्ञो का आदर व सम्मान किया करते थे।[3]

नन्दन जी अपने बाल्यकाल से ही संगीत में रूचि रखते थे। अल्प आयु में ही वे घर में रखी मेज पर अपनी छोटी अंगुलियों से तबला बजाने का प्रयास किया करते थे। वे अत्यन्त प्रतिभाशाली, चंचल और परिश्रमी बालक थे। जो शिक्षा के साथ अन्य गतिविधियों जैसे–बिलियर्ड, तैराकी, घुड़सवारी व नाव संचालन, लकड़ी से घर सज्जा का सामान बनाना इत्यादि कलाओं में निपूर्ण थे।

नन्दन जी ने प्रारम्भिक संगीत शिक्षा सदा शिव राव जी से ग्रहण की। कालान्तर में सुविख्यात बनारस घराने के तबला वादक पं. किशन महाराज से ग्रहण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

पारिवारिक सांगीतिक परिवेश :

पं. नन्दन मेहता जी पारिवारिक पृष्ठभूमि पुश्तैनी संगीतकारों की नहीं थी तथापि परिवार में संगीत के प्रति रूचि व प्रेम था और उनके यहाँ संगीतकारों का बहुत आदर किया जाता था। पं. जी का परिवार शिक्षित, सुसंस्कृत तथा अग्रगामी था। पण्डित नन्दन मेहता जी के व्यक्तित्व निर्माण में आपके पारिवारिक वातावरण का प्रमुख रूप से प्रभाव पड़ा। बाल्यकाल से ही पण्डित मेहता जी को अपने दादा (नर्मदा शंकर मेहता) से ओजस्विता, स्वाभिमानता तथा एक सच्चा प्रतिनिधित्व करने की क्षमता विरासत में प्राप्त हुए।[4]

वे भारतीय दर्शनशास्त्र के इतिहास और गुजराती कवियों काव्यों में गहरी जानकारी और उच्चकोटी दृष्टिकोण रखते थे।

सरदार पटेल और उनके बड़े भाई श्री विट्ठल पटेल स्वतंत्रता और स्वशासनआन्दोलन में इनसे सलाह/विचार–विमर्श किया करते थे। वे मुम्बई के नगरपालिका कमिश्नर नियुक्त किये गये।

प्रशासन से जुड़े मामलों के प्रति उनके उल्लेखनीय योगदान को देखते हुए **'देव बहादुर'** उपाधि दी गयी। नर्मदा शंकर मेहता जी के एक पुत्री भारती व दो पुत्र इन्द्रवर्धन मेहता और यशोधर मेहता थे।[5]

---

[3] डॉ. अजय कुमार, बनारस घराने के प्रवर्तक पं. रामसहाय जी की तबला–वादन परम्परा, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्टीब्यूटर्स, 46975–ए, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली, 110002, 2011 ।

[4] डॉ. वसुधा सक्सेना, ताल के लक्ष्य–लक्षण स्वरूप में एकरूपता, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्टीब्यूटर्स, 46975–ए, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली, 110002, 2006।

[5] पूर्वी मेहता जी से प्राप्त जानकारी के अनुसार

पं. नन्दन मेहता जी के पिताजी यशोधर मेहता जी बहुरंगी व्यक्तित्व के धनी थे। वे उच्चकोटि के वकील होने के साथ–साथ साहित्य व ज्योतिष विद्या का गहरा ज्ञान रखते थे। इनका जन्म 1909 में हुआ था, इन्होंने कानून की पढ़ाई इग्लैण्ड से की।

वे नियमित रूप से ज्योतिष विद्या और रहस्यमीय साधन पर लेख लिखते थे। उन्होंने 1959 में अहमदाबाद में 'आगम निगम' नाम से एक लेख लिखा था जो कि वर्तमान में भी प्रचलित/प्रसिद्ध है।

यशोधरा भाई ने अहमदाबाद के न्यायालय में कानूनी वकालत भी की साथ ही उनकी रूचि हमेशा साहित्य और साहित्यक गतिविधियों की तरफ ही रही।

उनके नाटक ''20 छोड़ो लाल'' 1947 में प्रकाशित हुआ साथ ही और कई उपन्यास जैसे – ''सारी जाती रेती'' ''महारात्री'' इत्यादि लिखे। अपने पूरे जीवन में (यशोधर मेहता) पं. नन्दन मेहता जी के पिताजी ने भारत सरकार के साथ काम किया।[6]

शुरू में उन्हें दिल्ली में कानूनी आयोग का सदस्य नियुक्त किया और बाद में शास्त्रीय भाषा आयोग का अध्यक्ष बने जहाँ उन्होंने एक दशाब्दी तक कार्य किया। पं. जी के पिताजी तत्कालीन अंग्रेजी सरकार की सामाजिक नीतियों से घृणा करते थे।

उन्होंने सन् 1950 से 6 वर्षों तक जनसंघ में भी कार्य किया। पं. नन्दन मेहता जी की माताजी (वसुमति मेहता) एक विनम्र, समर्पित और पारिवारिक भारतीय गृहिणी थी। हर तरीके से वह एक खुबसूरत महिला थी, जो गुजरात अहमदाबाद के प्रसिद्ध बनोरेट परिवार की पुत्री थी।

बेनोरेट परिवार अहमदाबाद शहर के प्रतिष्ठित व सम्मानीय परिवार में से एक है। सर चिनुभाई बेरोनेट (पं. नन्दन जी के नाना जी) एक प्रसिद्ध समाज सुधारक थे इन्होंने शराब, बालश्रम व साक्षरता के विरूद्ध आंदोलन किये।

ऐसे युग में जहाँ लिंग पक्षपात मजबूत था और महिला साक्षरता लगभग अनसूनी थी उन्होंने लडकियों के लिए एक विशेष विद्यालय खोला।

उन्हें विभिन्न भाषाओं का ज्ञान था जैसे – अंग्रेजी, फारसी संस्कृत और गुजराती। (सर चिनुभाई बारोनेट) नन्दन जी के नाना जी अहमदाबाद नगरपालिका व अहमदाबाद वस्त्र मील के मालिकों के संगठन के अध्यक्ष बने। वे विधानसभा के व हिन्दू समुदाय के सदस्य बने।[7]

उनके समाज में महत्वपूर्ण योगदान के लिए ब्रिटेन सरकार द्वारा 'नाईटेड' की उपाधि दी गई।

पं. जी के नाना का घर शान्तिकुंज शिव सदन (दादा जी का घर) से कुछ ही दूरी पर था। यह साबरमती नदी के किनारे वास्तुकला से निर्मित भवन है। गुजरात, अहमदाबाद में उस समय जितने भी श्रेष्ठ गायक व वादक कलाकार आते वे उनके निवास (शान्तिकुंज) पर ही ठहरते और इस प्रकार संगीत की विभिन्न महफिले व बैठकें होती। कई दिनों तक

[6] डॉ. शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्टीब्यूटर्स, 46975–ए, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली, 110002, 2012 ।

[7] स्व. रामशंकर पागलदास, तबला कौमुदी, रामचन्द्र संगीत कार्यालय, ग्वालियर,

ये विद्वान कलाकार उनके ननिहाल पर ही ठहरते थे।[8] परिवार के अन्य सदस्य भी संगीत में बहुत रूचि रखते थे। महान संगीतज्ञों के सम्पर्क व स्वयं के सांगेतिक आकर्षण के कारण बालक नन्दन अत्यन्त अल्प आयु में अपनी छोटी अंगुलियाँ छोटी आकृति के तबले जो बच्चों के खेलने के उद्देश्य से होती है पर चलाई। नन्दन अपने बचपन के दिनों से ही तेज प्रज्ञा बुद्धि आत्मविश्वासी एवं तबला वादन की क्रियाओं के लिए समर्पित थे। उन्होंने तबला वादन की शिक्षा सदा शिव राव से ग्रहण की जो कि उनके प्रारम्भिक स्कूल (श्रेयांस) के संगीत शिक्षक थे।

नन्दन की प्रारम्भिक शिक्षा मनोरमा व लीला साराभाई द्वारा निर्मित एक उच्चकोटि के के विद्यालय (श्रेयांस) में हुई। ईस्ट इण्डिया कम्पनी कम्पाइड में स्थित इस विद्यालय की स्थापना सन् 1947 में बच्चों के शारीरिक, मानसिक विकास के साथ उत्तम शिक्षा, जीवन में उपयोग में आने वाले विभिन्न प्रकार के कार्यों को सिखाने के उद्देश्य के साथ हुई।[9]

इन कार्यों को सिखाने के लिए विभिन्न कार्यशालाएँ उपलब्ध थी। जैसे–कार कार्यशाला, लौहा कार्यशाला, बढ़ई कक्ष इत्यादि। श्रेयांस स्कूल की विशेषता थी कि यहाँ समय–समय पर जीवन के नैतिक मूल्यों को समझाने तथा अपने अनुभवों के आधार पर विद्यार्थियों को सम्बोधन करने के लिए प्रसिद्ध व्यक्तियों जैसे – पृथ्वीराज कपूर, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, भारतीय वैज्ञानिक सी.वी. रमन विश्व प्रसिद्ध मूर्तिकार अलेक्जेंडर काल्डेर इत्यादि को आमंत्रित किया जाता था।[10]

श्रेयांस विद्यालय में प्राथमिक स्तर पर हर माह के के अन्त में मौखिक परीक्षाओं का आयोजन होता था और परिणाम नियमित रूप से माता–पिता तथा अभिभावकों को भेजा जाता था।

नन्दन ने कठिन परिश्रम व लगन से एस.एस.सी. की परीक्षा प्रथम बार में ही प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कर ली। नन्दन के मित्र जहाँगीर बताते है कि :–

Jehangir has an admirable footnote to Nandan's stint at the School in saying "He hardly burnt anymidnight oil studying and yet passed the S.S.C. examinations in the first class". He added that Nandan was very good at Subjects like mathematics and was extremely proficient at Enligsh language.[11]

गुरू जी नन्दन मेहता जी अपने बाल्य काल के दिनों से ही एक गुणी व प्रतिभा सम्पन्न एवं चंचल व्यक्तित्व के धनी थे और उन के गुणों में जो सब से अधिक प्रकाशमान करने वाला गुण था वह यह था कि वे किसी भी व्यक्ति की अन्याय पूर्ण बात सहन नहीं कर सकते थे। वे सदैव ही सत्य एवं न्याय के मार्ग पर चलते थे। बाल्य काल से ही वे

8 हिम्मत लाल कपासी जी से प्राप्त साक्षात्कार के अनुसार

9 पं. छोटेलाल मिश्र, ताल प्रसून, कनिष्ठ पब्लिशर्स द्वितीय संस्करण, 2012।

10 पं. छोटेलाल मिश्र, ताल प्रबन्ध, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्टीब्यूटर्स, 46975–ए, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली, 110002, 2006 ।

11 मन्जू मेहता जी से प्राप्त जानकारी के अनुसार

किसी अन्यायपूर्ण एवं अप्रिय वाद के लिए ना सिर्फ विरोध करते थे अपितु उन्हें एक ही संदेश देने का प्रयास भी किया करते थे।

उनके बचपन में जब वे श्रेयांस स्कूल में शिक्षा ग्रहण किया करते थे उनकी कक्षा में एक फारसी विद्यार्थी था जिसकी अपने हिस्से से अधिक लेने की एक अप्रिय आदत थी जब अन्य विद्यार्थियों का खाने का टिफिन आता था तब यह लड़का स्कूल के किसी के लिए लाए गए टिफिन पर हमला कर देता था और तुरन्त बिना इस बात से प्रभावित कि दूसरी तरफ से इच्छुक न्यौता है या नहीं वह खाने की चीजों को ले लेता था। कई विद्यार्थी इस असज्जनीय व्यवहारसे परेशान थे लेकिन उससे अविनम्र झगड़ा करने से डरते थे। नन्दन ने दो बार इस दृश्य का निरीक्षण किया और सबक सिखाने का निश्चय किया। वह आगे बढ़ा और निम्नलिखित खाद्य घटकों से एक मिश्रण तैयार किया। गधे की लीद की उचित मात्रा गोल गेंद के आकार में घुमायी गई, जिस का बेसन के साथ आटा मिलाकर और मूंगफली के तेल में गहरा तला गया और इसके बाद मीठे आचार का स्वाद जोड़ा गया और इस प्रकार उसे लड्डू के आकार का अंतिम रूप दिया गया।

एक लड़की प्रद्यन्या देसाई से सहयोग करने की प्रार्थना की गई और उसे बताया गया कि उसे साथियों की उपस्थिति में एक आकर्षण बक्सा तोहफे में दिया जायेगा जिसे उसने शालीनता से स्वीकार कर लेना है। फिर नन्दन के एक प्रिय मित्र ने उसे चमकीले डिब्बे में डालकर प्रद्यन्या देसाई को जन्मदिन क उपहार स्वरूप दिया गया। तभी जैसे की उम्मीद थी उसी के अनुसार लड़के ने सोचा यह वास्तव में उसके कक्षा विद्यार्थियों की तरफ से उसे घर पर बनी मिठाई इस तरीके से उपहार में दी गई, उसने बक्सा 'खुशनुमा विस्मय' ''ओह, 'पहले मुझे इसे चखने दो'' के साथ छिन लिया।[12]

अन्त में जब सच्चाई का पता चला तो उसे अपनी गलती का अहसास हुआ बाद में लड़के को उपनाम ''लडविस'' प्राप्त हुआ जो उसके साथ उसके विद्यार्थी जीवन में रहा।

Smt. Leena Mangaldas, The Managing trustee and Prinipal of Shreyans School, Nandan was a good student and his pranks were hardly backed with malice at anyone.[13]

पढ़ाई के साथ–साथ नन्दन अन्य आक्रमक गतिविधियों जैसे – घुड़सवारी, बिलियर्ड, तैराकी नाव संचालन व पर्वतारोहण इत्यादि में भी बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया करते थे।

Nandan friend 'Jehangir' vouches for the fact that Nandan was especially good and very nimble when it come to rook climbing since both of them took up the course at able together.

'यथा नाम तथा गुण' इस उक्ति के अनुसार बालक नन्दन 'नन्दन' का मूर्तिमन्त प्रतीक थे। उनकी क्रीडाएं महान देवकी वासुदेव नन्दन की तरह थी वे देवकी नन्दन की तरह ही उनकी कक्षा में पढ़ने वाली लड़कियों का थैला ऊँचाई पर छिपा दिया करते थे। जहाँ पर लड़कियों का हाथ पहुँचने में असमर्थ होता था।

नन्दन ने अपने जिज्ञासु कर्मठ व मधुर स्वभाव से विद्यालयीय शिक्षा के साथ–साथ संगीत शिक्षा में भी प्रवीणता पा ली थी। तबला सिखने की उनकी गम्भीर इच्छा उनके

[12] नन्दन जी की मित्र प्रधन्या देसाई जी के अनुसार
[13] हिम्मत लाल कपानी से साक्षात्कार

स्कूल के दिनों से ही थी उनके पहले गुरू श्रेयांस स्कूल में संगीत अध्यापक सदाशिव राव थे। जिसने यह सब प्रसिद्ध कलाकार गोविन्दराव बुरहानपुर से सीखा था। युवा नन्दन ने अपने सभी औपचारिक पाठ पूरी गम्भीरता व समर्पण के साथ सीखे।

सन् 1960 में नन्दन जी अपनी प्रथम मंचीय प्रस्तुती प्रितम नगर में सुप्रसिद्ध गायक हेमन्त कुमार के एकल गायन कार्यक्रम में तबला संगत (वादन) करते हुए दी। गायक ने युवा तबला वादक नन्दन का यह कहते हुए ताली बजाकर अभिवादन किया कि नन्दन संगीत की दुनिया में अपनी विशिष्ट पहचान बनायेंगे। भविष्य में गायक के द्वारा कहे हुए ये शब्द माँ सरस्वती क आशीर्वाद स्वरूप सत्य सिद्ध हुए।

सन् 1961 में उन्होंने गुजरात विश्वविद्यालय में कला संकाय में स्नातक डिग्री के लिए प्रवेश लिया। आप सदैव संगीत तबला वादन की शिक्षा ग्रहण करने के लिए आतुर रहते थे और इसकी तरफ आपका ध्यान इतना आकर्षित हुआ कि आप अपना सम्पूर्ण समय तबला वादन में ही व्यतीत करते थे और आपने तबला वादन को ही अपने जीवन का उद्देश्य मान लिया था।

जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव आपके अध्ययन पर पड़ाप जिससे आपको पारिवारिक असहमतता का सामना करना पड़ा। अहमदाबाद का प्रतिष्ठित धनवान मेहता परिवार संगीतज्ञो का सदैव आदर करता था और संगीत सुनन की रूचि थी। परन्तु पिता यशोधर मेहता समाज में अपने परिवार की प्रतिष्ठा के बारे में अत्यधिक सचेत थे। आरम्भ से ही यशोधर मेहता अपने पुत्र के संगीत को सम्पूर्ण समय का व्यवसाय के रूप में लेने के विचार से असहमत थे।

मेहता परिवार एक कठोर अनुशासित परिवार था। जहाँ पर नियमों का पालन करना सर्वोपरि था उसी नियमावली में शुमार नियम था कि रात्रि 9 बजे के पश्चात् घर का कोई भी बालक बाहर अकेले नहीं जायेगा। गुरूजी नन्दन मेहता जी अपना सम्पूर्ण जीवन संगीत में व्यतीत करने का निश्चय कर चुके थे। उनके लिए इस नियम का पालन करना अत्यधिक कठिन हो गया था। क्योंकि सभी प्रकार के सांगेतिक कार्यक्रम अधिकतर रात्रि में ही सम्पन्न होते है और यशोधर मेहता नन्दन जी के पिताजी को नन्दन के सांगीतक समाहारों में प्रस्तुतिकरण अप्रिय था। इन विपरित परिस्थितियों में भी नन्दन अपना सांगेतिक रियाज जारी रखा और रात्रि में सम्पूर्ण परिवार के सभी सदस्यों के सो जाने के पश्चात् छिपकर के सांगेतिक कार्यक्रमों में भी हिस्सा लिया।

इस प्रकार कई अनुभवी गायकों के साथ संगत व एकल तबला वादन प्रस्तुति कर नन्दन जी ने प्रसिद्धि प्राप्त की और महाविद्यालय में प्रवेश लिया। महाविद्यालय में पढ़ाई करते समय नन्दन जी का सभी अध्यापकों व मित्रों द्वारा उनके तबला वादन की उपलब्धि के कारण उनको सम्मान दिया करते थे। सभी के मन में नन्दन के प्रति प्रशंसा व आदर का भाव रहता था।

महाविद्यालय में होने वाले सभी प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए महाविद्यालय प्रशासन द्वारा नन्दन को विशेष रूप से मौखिक आमंत्रण दिया जाता था। नन्दन जी ने गुजरात प्रान्त में होने वाले पारम्परिक गरबा एवं अन्य नृत्य प्रतियोगिताओं में तबला वादन कर श्रोताओं के विशेष आकर्षण का केन्द्र रहे।

इन सभी उपलब्धियों के साथ उनका व्यवहार मित्रवत् व मिलनसार था। वे अपने सभी मित्रों से बहुत अधिक हँसी मजाक किया करते थे। उन्होंने कॉलेज में एक सभी मित्रों बीच एक योजना बनाई जिसके अनुसार रोजाना होने वाले केन्टिन खर्च को बारी–बारी से

सभी लोग दिया करेंगे और किसे किस दिन बिल देना है। इसका चुनाव पर्ची उठाकर किया जायेगा। लगभग दो महीने तक गुरूजी की चलाई गई यह योजना नियमित रूप से सक्रिय थी। वास्तव में गुरूजी अपने मन में यह निर्धारित कर लिया करते थे कि आज का बिल कौन चुकायेगा और वे सभी पर्चियों पर निर्धारित व्यक्ति का नाम लिख दिया करते थे।

नन्दन जी का व्यक्तित्व जहाँ मित्रवत् मिलनसार सभी को प्रसन्न कर देने वाला, खुशमिजाज, भावुक और आत्मीयता से परिपूर्ण था व दूसरी ओर उनके जीवन में नियमों का कठोरता से अनुपालन करते हुए गुरूओं के प्रति विशेष आदर था उनका मानना था कि गुरू के शब्दों को मंत्र के समान ग्रहण करना चाहिए। नन्दन जी जीवन में गुरू को पथ प्रदर्शक होने के साथ–साथ देवता समान सम्मान प्राप्त था।

नन्दन मेहता जी की सांगितिक शिक्षा :

गुरू का अर्थ :

'गु' अक्षर अंधकार का प्रतीक है तथा 'रू' का अर्थ अंधेरा दूर करना अर्थात् अंधकार को दूर करने वाल, अंधकार का निराकरण करने वाला गुरू ही होता है। एक श्लोक में कहा गया है–

गु शब्द स्त्वंधकारस्धात् रू शब्दस्तान्निवर्तकः।
तधोरिक्यं परब्रह्म, गुरूनित्यभिधोयते।।

नन्दन जी ने तबला वादन की शिक्षा शुरूआती समय में सदाशिव राव जी से तत्पश्चात् बनारस घराने के सुविख्यात तबलाचार्य पं. किशन महाराज जी से ग्रहण की किशन महाराज बनारस घराने के वरिष्ठ कलाकारों में से एक थे।

पं. किशन महाराज का जन्म भारत की सांस्कृतिक राजधानी वाराणसी में 3 सितम्बर 1923 को श्री कृष्ण जन्माष्टमी की रात हुआ था। महाराज जी के पिता पं. हरि मिश्र अच्छे ताबलिक थे लेकिन उनकी मृत्यु अल्पायु में ही हो जाने से उनके निःसंतान बड़े भाई तालबाध शिरोमणि पं. कठे महाराज ने इन्हें पुत्रवत् प्यार और शिक्षा दी। जब ये सात वर्ष के थे, तभी से तबला सीखना शुरू किया था। प्रारम्भ से ही इनकी रूचि तैयारी पर न होकर लयकारी और कठिन तालों के वादन पर थी। इसलिए ये विषम मात्रा की तालों (जैसे – 9, 11, 13, 15, 17, 19, 21 आदि) को बजाने में उतने ही निपुण थे, जितना कि सम मात्रा के तालों को बजाने में। इनके पास तिहाइयों और टुकड़ों का भण्डार था। नृत्य के साथ इनकी संगति बेजोड़ होती थी।

देश में प्राप्त अपार ख्याति के साथ–साथ नेपाल, अफगानिस्तान, मॉरीशस, इग्लैंड, रूस, पोलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी, ऑस्ट्रिया, अमेरिका आदि अनेक देशों में भी इन्होंने प्रसिद्धि प्राप्त की। ये आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के विशिष्ट श्रेणी के कलाकार थे। इन्होंने देश के अनेकों प्रतिष्ठित कलाकार के साथ संगति की थी। जैसे उस्ताद फैयाज खाँ, पं. ओंकारनाथ ठाकुर, उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ, पं. भीमसेन जोशी, पं. रविशंकर, उस्ताद अली अकबर खाँ, पं. शम्भू महाराज, सितारा देवी, नटराज गोपीकृष्ण, पं. बिरजू महाराज, श्रीमती गिरिजा देवी इत्यादि। ये विदेशों में भी अपने तबला वादन के द्वारा विख्यात थे। इन्होंने एडिनबर्ग समारोह और लंदन में आयोजित कॉमनवेल्थ आर्ट फेस्टिवल सन् 1965 में भी तबला वादन किया था। इनको मिली उपाधि एवं सम्मान प्रयाग संगीत समिति द्वारा सन् 1969 ई. में 'संगति सम्राट', बम्बई की एक संख्या द्वारा 'ताल विलास', उस्ताद इनायत

खाँ मेमोरियल अवार्ड, केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार–1984, उस्ताद हाफिज अली खाँ अवार्ड–1986 उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी द्वारा सन् 1970 में 'रत्न सदस्यता' प्रदान की गई। भारत सरकार ने इनको पद्मश्री–1973 एवं पद्मविभूषण–2002 से अलंकृत किया था। इनका स्वर्गवास 5 मई 2008 को वाराणसी में ही हुआ। इनके प्रमुख शिष्यों में नन्दन मेहता, अनिल पालित, कुमार बोस, कपिलदेव सिंह, महेन्द्र सिंह, संदीप दाल, सुखविन्दर सिंह नामधारी हरिनारायण शाह पुत्र पूरण महाराज, नाती शुभशंकर महाराज आदि है।

नन्दन मेहता जी उनके वशिष्ठ शिष्यों में से एक थे। वास्तव में नन्दन के लिए बहुत श्रेयकर है कि तबले की बनारस शैली बिना शारीरिक रूप से बनारस में रहे और गुरू के व्यक्तिगत रूप से अनुपस्थित रहते हुए समय के एक जारी काल में सीखा वास्तव में पण्डित, किशन महाराज केवल साल में दो सप्ताह ही अहमदाबाद आते थे और या तो शांतिकुंज में रहते या शिवसदन में रहते।

नन्दन जी का अपने गुरू किशन महाराज जी के साथ अत्यन्त आत्मीय पिता–पुत्र जैसे सम्बन्ध थे। उन्होंने महाराज की सभी तबला वादन की विशेषताएँ (उठान, तिहाइयाँ, टुकड़े, परन, मत, फर्द और स्तुति–परन, चांटी लव और स्याही तीनों का विवेक मुक्त प्रयोग) सीखी। वास्तव में नन्दन जी को अपने गुरू के समक्ष बैठकर तबला वादन की बारिकियां सीखने के अवसर बहुत कम मिलते थे। परन्तु तबला वादन के प्रति उनके समर्पण, एकाग्रचितता व बुद्धिमता से उन्होंने अपने गुरू की मंचीय प्रस्तुतियों को सुनकर उन्हें ग्रहण किया। नन्दन जी ने आँखें बंद करके सिर्फ रियाज ही नहीं किया, बल्कि तबलों पर सोच–विचार और चिन्तन भी किया।

गुरू जी किशन महाराज जी सदैव श्रोताओं के समक्ष अद्भूत तबला वादन का प्रदर्शन किया करते थे। एक बार उनके प्रिय शिष्य नन्दन ने जब अहमदाबाद के गुज्जर हॉल में सप्तक फेस्टिवल के अन्तर्गत किशन महाराज जी का तबला वादन प्रस्तुति करवायी तो किशन महाराज जी ने एक सामान्य तबला वादक व व्यावसायिक तबला वादक में विशिष्ट अन्तर बताते हुए कहा कि एक व्यावसायिक तबला वादक अपने मन में दो चार तिहाई रखकर मंच पर प्रस्तुति करने आता है और बार–बार उन्हीं का वादन करता है, इसके विपरीत एक सदैव रियाज करने वाला मेहनती तबला वादक अपनी उपज के अनुसार मंच पर आसीन्न रहते हुए तिहाई का निर्माण करता है।[14]

पं. किशन महाराज ने संगीत में गणित के महत्व को रेखांकित किया। उनकी कौनसी तिहाई कब, कहाँ से शुरू होती है और उसका एक भाग कितनी मात्राओं का है–इसकी थाह पाना प्रायः बहुत कठिन होता था। उनके स्वतंत्र वादन का वह अंश अत्यन्त रोचक और चमत्कारिक होता था, जिसमें वे दर्शकों से कहते थे कि किसी भी मात्रा पर आप अंगुली उठाइए वहीं से तिहाई लेकर न केवल समय पर बल्कि जहाँ आप कहेंगे वहाँ आऊंगा। उल्लेखनीय यह भी है कि उन्हें यह महारत मात्र तीन ताल में नहीं बल्कि लगभग सभी तालों में हासिल थी। दिसम्बर 2007 में दिल्ली में ''सा मा पा वितस्ता सम्मान'' लेने क बाद एकल तबला वादन करते हुए उन्होंने अपनी इस कला का प्रदर्शन करके खचाखच भरे सभागार में श्रोताओं को चकित और रोमांचित कर दिया था।

[14] श्रीमती मन्जू मेहता से प्राप्त जानकारी के अनुसार

पं. नन्दन मेहता जी एक सरल व सहज स्वभाव के व्यक्ति थे जिन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय संगति शिक्षा और संगितिक कार्यक्रमों में व्यतीत किया अहमदाबाद गुजरात में होने वाले सभी कार्यक्रमों को वो अपने मित्रों के साथ सुनने के लिए जाते थे सन् 1966–67 के करीब जब वे अहमदाबाद के टाउन हॉल में होने वाले सितार–सरोद वाद्य की जुगलबंधी देखने गए तो उन्होंने देखा की सरोदवाधक दामोदर लाल जी कावरा और सितार वाद्य जयपुर की उभरती हुई प्रसिद्ध कलाकारा सुश्री मन्जू भट्ट के द्वारा बजाया जा रहा था वे मन्जू भट्ट के बजाये सितार वादन, व वादिका दोनो की ओर अत्यधिक आर्कषित हुए और मन ही मन ईश्वर को धन्यवाद देने लगे की ईश्वर ने मन्जू भट्ट के रूप में उन्हें उनकी जीवन संगिनी से मिला दिया।

इस के उपरांत अहमदाबाद में हुए कई शास्त्रीय संगीत कार्यक्रमों में मन्जू जी के सितार वादन के साथ मेहता नन्दन जी ने तबले पर संगत की और इन कार्यक्रमों में आप दोनो के मित्रवत सम्बन्ध हो गए। गुरूजनों के आर्शीवाद व परिवार की सहमति से बृजलाल काबरा जी (दामोदर लाल काबरा जी के छोटे भाई) के मध्यस्ता में गुजरात और राजस्थान के ये दो परिवारों का मिलन हुआ। 6 सितम्बर 1968 में मन्जु जी व नन्दन जी आजीवन एक सूत्र में बंध गये।

मन्जू भट्ट मेहता जी जयपुर (गुलाबी नगरी) के प्रसिद्ध भट्ट तेलंग परिवार की बेटी थी आपके पिता मनमोहन भट्ट व माता चंदकला भट्ट थे जो उस समय के प्रसद्वि संगीतज्ञ थे चंदकला भट्ट भरतपुर संगीत महाविद्यालय में संगीत शिक्षिका थी मन्जू मेहता जी की प्रारंभिक शिक्षा जयपुर से ही हुई आपने ग्रेजुऐशन भी जयपुर से ही किया तत्पश्चात् छात्रवती प्राप्त कर आप ने जोधपुर के प्रसिद्व सरोदवादक दामोदर लाल काबरा जी के घर रहकर सीखा। आपके प्रथम गुरू आपके ज्येष्ठ भ्राता शास्त्री मोहन भट्ट थे मन्जू मेहता जी का जन्म सांगेतिक परिवार में हुआ क्योंकि उन्हें संगीत की शिक्षा उनके घर पर ही गायकों और वादको को सुन–सुन कर प्राप्त हुई उनके भाई पिता गुरू उनको संगीत शिक्षा देकर उचित मार्गदर्शन किया।

सौभाग्य से विवाह के उपरांत भी नन्दन जी के सानिध्य में आपके चारों ओर वहीं सांगेतिक वातावरण कायम रहा आप व मेहता जी साथ में रियाज करते थे व संगीत जगत के लोगों से निरंतर मिलते जुलते रहते मृनालनी सारा बहन के अनुरोध पर आप दोनो में दरपणा संगीत नृत्य विद्यालय में सितार व तबला वाद्यों की शिक्षा देना प्रारंभ कर दिया। 1968–78 तक दरपणा संगीत महाविद्यालय का अभिन्न अंग रहे कुछ समय पश्चात् (1980) में नन्दन जी व मन्जू जी ने सप्तक स्कूल ऑफ म्युजिक की स्थापना की यहां सप्तक को स्थापित करने में प्रफुल अनु भाई, हिम्मत लाल कपासी और रूपांदेशाह, डी. वी. त्रिवेदी आदि ने सहयोग किया।

यहां पर विद्यार्थियों को अत्यधिक कम शुल्क में शास्त्रीय संगीत की शिक्षा दी जाती थी नन्दन मेहता जी द्वारा कई शिष्यों को अच्छी कोटि के तबला वादन की शिक्षा दी गयी।

आपने 2 पुत्रियां पूर्वी मेहता व हेतल मेहता को जन्म दिया संगीतमय लालीत पूर्ण वातावरण में बड़ो का आदर, कठोर परिश्रम व सब के साथ शिष्ठता का व्यवहार जैसे उच्च संस्कारों से सुसज्य कर आपने अपनी पुत्रीयों का लालन पालन किया अपनी पुत्रियों की प्रारंभिक शिक्षा अहमदाबाद के सर्वश्रेष्ठ स्कूल में हुई जहां आपकी पुत्रीयों के द्वारा वर्ष भर आयोजित होने वाली विभिनन गतिविधियों में भाग लेकर पिता का गौरव बढ़ाया कालान्तर

में पूर्वी व हेतल मेहता जी ने भी अपने माता पिता जी के पथ का अनुसरण किया अपना सम्पूर्ण जीवन संगीत को सर्मपित कर दिया।

श्री चिरंजी लाल जी बताते है कि जब पूर्वी व हेतल दोनो छोटी थी तब उन्हें नन्दन जी ने प्रतिदिन स्कूल जाने के लिए एक सुंदर और सुसज्जित राजशाही बग्गी खरीद कर दी तथा एक बग्गी चालक भी नियुक्त किया जो बग्गी की देखभाल भी करता था और बालिकाओं को स्कूल से लाता और ले जाता भी था कुछ दिन तक वो बच्चियां उस बग्गी में गई। मगर एक दिन बग्गी की घोडी के सामने एक गाड़ी ने होर्न बजा दिया। आवाज से घोड़े बिदग गये और बग्गी में बैठी बच्चियां डर गई घर आकर दोनो बच्चों ने अपने पिता को घटना का पूरा वर्तात बताया जब सौभाग्य से चिरंजी लाल जी भी वहीं बैठे थे गुरूजी मेहता साहब ने पुत्रीयों की इच्छा का सम्मान करते हुए कहा कि अगर तुम लोग इस बग्गी में नहीं बैठना चाहती तो कोई बात नहीं। ठीक उसी पल नंदन जी की नजर उस चालक की ओर पड़ी। गुरूजी ने उसके जीवन जीविका की चिन्ता करते हुए वह बग्गी उस चालक को ही भेंट स्वरूप दे दी। गुरूजी अपनी पुत्रीयों को लेश मात्र भी परेशान नहीं देख सकते थे।

पपा जब भी रियाज करता हुआ देखते तो बहुत प्रसन्न होते मगर सिखाते तो वो अपने सभी शिष्यों के साथ सप्तक में ही कभी भी उन्होंने मेरे समक्ष तो मेरी तारी नहीं की मगर उन्होंने मेरी आंखो में हमेश हमारे उत्तम भविष्य की कल्पना की थी आज गुरूजी के आशीर्वाद स्वरूप उनकी दोनो पुत्रीयां बाध्य वादन के क्षेत्र में भारत में ही नहीं अपितु विश्व में उनका नाम रोशन कर रही है।

आप जीवन पर्यन्त सप्तक के माध्यम से संगीत के प्रचार प्रसार में निवृत रहे आपने जीवन भर सदैव कपड़े का व्यवसाय व संगीत की उपासना की आप ही के अथक प्रयास है कि आज भी सप्तक संस्था में जहां शिष्यों को उच्च कोटी की शास्त्रीय शिक्षा दी जाती है। वहीं उनके शिष्य व सप्तक से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति की आर्थिक, सामाजिक व भावनात्मक समस्या का निवारण भी किया जाता है। वर्षभर अनेक शास्त्रीय संगति के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। जीवन के अन्तिम कुछ वर्ष आप बीमार रहे बीमारी में भी आप कभी निराश नहीं हुए आपके शिष्य हेमंत भट्ट (जो कि मन्जू मेहता जी के भतीजे थे) ने साक्षात्कार में बताया की बीमार होने के बावजूद जब वे बोल भी नहीं पाते थे तब भी वे हमेश अपने सभी शिष्यों, परिजनों व साथी कलाकारों की खैरियत के बारे में लिखकर पूछते रहते थे।

स्व. पंडित नन्दन मेहता जी अन्तिम समय बहुत दुखद रहा। जीवन के अन्तिम पड़ाव में मुंह का कैंसर हो गया और आप बहुत बीमार रहे और आप कुछ भी नहीं बोल पाते थे आप लिखकर ही बात किया करते थे। नन्दन जी अपने अन्तिम समय तक संगीत में ही विलुप्त थे और सदैव संगीत की रिकॉर्डिंग सुना करते थे उनके शिष्य प्रवीण शिन्दे जी साक्षात्कार में बताते है कि उन्हें पैर से ताल देने की आदत थी और ये आदत उनके अन्तिम पल तक निरंतर चलती रही और सन् 2010 के मार्च माह में दिनांक 26 को पंडित जी का देवलोक गमन हो गया।

नन्दन मेहता जी के कोई पुत्र नहीं था परन्तु आपका व्यवहार अपने शि यों के प्रति जीवन भर रहा आपका व्यवहार इतना अच्छा था कि जब आपका अन्तिम समय था तब आपके सभी शिष्य आपकी सेवा के लिए तत्पर थे ऊपर सख्त दिखने वाले नन्दन जी बहुत विनम्र थे आप सदैव अपने शिष्यों को अपना पुत्र ही माना तथा सदैव अपने शिष्यों

की ना सिर्फ आर्थिक मदद करते थे अपितु उनकी भावनात्मक रूप से भी सहायता करते थे।

पं. नन्दन मेहता जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन संगीत की साधना में लगा दिया। उन्होंने अपने शिष्यों को भी पूर्ण लगन व प्रेम से संगीत की शिक्षा दी तथा संगीत की परम्परा को और अधिक समृद्ध बनाया। प्रसिद्ध कलाकार की वादन शैली से प्रभावित होकर ही शिष्य उनसे शिक्षा ग्रहण करने के लिये आते थे। नन्दन मेहता जी अपने सभी शिष्यों को तबला वादन की बारीकियों का रियाज करवाते थे। उन सभी शिष्यों में उच्च कोटि के कलाकार नहीं बन पाये हैं किन्तु कुछ शिष्यों ने गुरू का नाम रोशन करने के लिए कड़ी मेहनत की है तथा उच्च कोटि के कलाकार बने हैं। ऐसे ही प्रतिभाशाली व गुणी शिष्यों के द्वारा गुरू का नाम रोशन होता है तथा उनकी शिष्य परम्परा और घरानों का भी विस्तार होता है। आपके योगदान को शिष्यों के माध्यम से निम्न भॉति स्पष्ट करने का प्रयास किया गया हैं क्योंकि भारत एंव विदेशों में प0 नन्दनजी के शिष्य श्रंखला अद्भूत है। यह नन्दन मेहता जी की बहुत बड़ी उपलब्धि हैं, कि उन्होंने अपने संतान व शिष्य सभी को पूर्ण निष्ठा से संगीत की शिक्षा दी।

पं. नन्दन मेहता जी ने अपनी तालीम पूरी होने के बाद कुछ छोटे–मोटे अवसरों पर तबला बजाया परन्तु जब उन्हें राज्य स्तरीय सार्वजनिक मंच पर अपना पदार्पण किया, वहीं से इन्हें तबला वादक के रूप में बड़ी पहचान मिली, इस पहचान के बाद फिर नन्दनजी को पीछे मुड़कर नहीं देखना पड़ा। प. नन्दनजी जी भारत के दूर–दराज इलाकों से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर रूस, जर्मनी, पूर्वी अफ्रीका, अफगानिस्तान और ईरान जैसे देशों तक में अपने तबले की गूंज पहुँचा चुके है।

यूँ तो देश–विदेश सभी जगह श्रोताओं का प्यार उन्हें मिला पर अहमदाबाद, गुजरात के कुछ चुनिंदा मंच प्रदर्शन, उनके लिए अभूतपूर्व याद बन गयी थी। जिसमें से कुछ मंच प्रदर्शन के दौरान कड़कड़ाती रात में हाल के बाहर भी सैकड़ों लोग भाव विभोर होकर पण्डित जी की उंगलियों की थाप का जादू सुनते रहते थे।

स्व. पं. नन्दन मेहता जी का वादन क्षेत्र में विशेष योगदान

पं. नन्दन मेहता जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन संगीत की साधना में लगा दिया। उन्होंने अपने शिष्यों को भी पूर्ण लगन व प्रेम से संगीत की शिक्षा दी तथा संगीत की परम्परा को और अधिक समृद्ध बनाया। प्रसिद्ध कलाकार की वादन शैली से प्रभावित होकर ही शिष्य उनसे शिक्षा ग्रहण करने के लिये आते थे। नन्दन मेहता जी अपने सभी शिष्यों को तबला वादन की बारीकियों का रियाज करवाते थे। उन सभी शिष्यों में उच्च कोटि के कलाकार नहीं बन पाये हैं किन्तु कुछ शिष्यों ने गुरू का नाम रोशन करने के लिए कड़ी मेहनत की है तथा उच्च कोटि के कलाकार बने हैं। ऐसे ही प्रतिभाशाली व गुणी शिष्यों के द्वारा गुरू का नाम रोशन होता है तथा उनकी शिष्य परम्परा और घरानों का भी विस्तार होता है। आपके योगदान को शिष्यों के माध्यम से निम्न भॉति स्पष्ट करने का प्रयास किया गया हैं क्योंकि भारत एंव विदेशों में प0 नन्दनजी के शिष्य श्रंखला अद्भूत है। यह नन्दन मेहता जी की बहुत बड़ी उपलब्धि हैं, कि उन्होंने अपने संतान व शिष्य सभी को पूर्ण निष्ठा से संगीत की शिक्षा दी।

पं. नन्दन मेहता जी ने अपनी तालीम पूरी होने के बाद कुछ छोटे–मोटे अवसरों पर तबला बजाया परन्तु जब उन्हें राज्य स्तरीय सार्वजानिक मंच पर अपना पदार्पण किया,

वहीं से इन्हें तबला वादक के रूप में बड़ी पहचान मिली, इस पहचान के बाद फिर नन्दनजी को पीछे मुड़कर नहीं देखना पड़ा। प. नन्दनजी जी भारत के दूर–दराज इलाकों से लेकर अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर रूस, जर्मनी, पूर्वी अफ्रीका, अफगानिस्तान और ईरान जैसे देशों तक में अपने तबले की गूंज पहुँचा चुके है।

यूँ तो देश–विदेश सभी जगह श्रोताओं का प्यार उन्हें मिला पर अहमदाबाद, गुजरात के कुछ चुनिंदा मंच प्रदर्शन, उनके लिए अभूतपूर्व याद बन गयी थी। जिसमें से कुछ मंच प्रदर्शन के दौरान कड़कड़ाती रात में हाल के बाहर भी सैकड़ों लोग भाव विभोर होकर पण्डित जी की उंगलियों की थाप का जादू सुनते रहते थे।

शास्त्रीय संगीत के प्रचारक के रूप में प. नन्दनजी के योगदान अविस्मीरणीय रहा। सुयोग्य गुरू, अविरल परिश्रम, अदम्य उत्साह, ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा, संयमी हदय आदि विशेषताओ से युक्त प. नन्दन मेहता जी युवावस्था में ही समस्त भारत में विख्यात हो गए। जहाँ और जिस संगीत सम्मेलन में इन्होंने अपना तबला–वादन प्रस्तुत किया वही के श्रोता इनकी मुक्त कंठ और खुले दिल से प्रशंसा कर उठे। संगीत प्रचार के सम्बन्ध में कई बार अखबारों में यह सुर्खियां रही है कि प. नन्दनजी जहाँ भी कार्यक्रम हुए, वे सभी सराहे गये। एक से एक गम्भीर विद्वानों से भरी महफिल में भी वह सदैव सफल रहे और हजारों की संख्या में उपस्थित भीड़ भरे संगीत समारोहों में भी उनका विश्वास ज्यों का त्यों ही रहता था। यहाँ तक कि भारतीय शास्त्रीय संगीत के नितान्त अपरिचित विदेशी श्रोताओं ने भी विदेशों में इनके कार्यक्रम को खूब सराहा।

स्व. प. नन्दन मेहता जी ने शास्त्रीय संगीत को विस्तारित, उत्कर्ष्ट करने एवं जनलोकप्रिय बनाने के लिए ही अपने गुरू किशन महाराज के सानिध्य से वर्ष 1980 में संगीत के 'सप्तक स्कूल' संस्था का गठन किया। यह स्कूल वाद्य (मधुर), मुखर संगीत और पर्कसो में प्रशिक्षण प्रदान करता है इसमें सायन संगीत गुरु–शिष्य परंपरा के अनुसार होते है। इसमें कोई संशय या लघुता नहीं है कि प. नंदनजी के कठिन प्रयासों ने उन्हें एक शास्त्रीय संगीत के विशुद्ध प्रचारक बना दिया।

शास्त्रीय संगीत के प्रचारक के रूप में प. नन्दनजी के योगदान अविस्मीरणीय रहा। सुयोग्य गुरू, अविरल परिश्रम, अदम्य उत्साह, ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा, संयमी हदय आदि विशेषताओं से युक्त प. नन्दन मेहता जी युवावस्था में ही समस्त भारत में विख्यात हो गए। जहाँ और जिस संगीत सम्मेलन में इन्होंने अपना तबला–वादन प्रस्तुत किया वही के श्रोता इनकी मुक्त कंठ और खुले दिल से प्रशंसा कर उठे। संगीत प्रचार के सम्बन्ध में कई बार अखबारों में यह सुर्खियां रही है कि प. नन्दनजी जहाँ भी कार्यक्रम हुए, वे सभी सराहे गये। एक से एक गम्भीर विद्वानों से भरी महफिल में भी वह सदैव सफल रहे और हजारों की संख्या में उपस्थित भीड़ भरे संगीत समारोहों में भी उनका विश्वास ज्यों का त्यों ही रहता था। यहाँ तक कि भारतीय शास्त्रीय संगीत के नितान्त अपरिचित विदेशी श्रोताओं ने भी विदेशों में इनके कार्यक्रम को खूब सराहा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

- डॉ० आबान–ई–मिस्त्री, पख़ावज और तबला घराने एवं परम्परायें, पृष्ठ सं० 109।
- संगीत पत्रिका (1999), जनवरी–फरवरी, पृष्ठ सं० 9।
- डॉ० आबान–ई–मिस्त्री, पख़ावज और तबला घराने एवं परम्परायें, पृष्ठ सं० 109।

- डॉ० आबान–ई–मिस्त्री, पख़ावज और तबला घराने एवं परम्परायें, पृष्ठ सं० 122।
- शोध प्रबन्ध, अवनद्ध वाद्यों के विकास में ग्वालियर का योगदान, पृष्ठ सं० 116।
- डॉ० अरूण कुमार सेन, भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन, पृ० सं० 145।
- ए हिस्टोरिकल स्टडी ऑफ इण्डियन म्यूजिक, स्वामी प्रज्ञानन्द, पृ० सं० 16–17।
- डॉ० वी०सी० देव, भारतीय संगीत वाद्य, देव, पृष्ठ सं० 48।
- डॉ० वी०सी० देव, भारतीय संगीत वाद्य, देव, पृष्ठ सं० 48 ।
- शोध प्रबन्ध, अवनद्ध वाद्यों के विकास में ग्वालियर का योगदान, पृष्ठ सं० 121।
- डॉ० योग माया शुक्ल–तबले का उद्‌गम विकास और वादन शैलियाँ, पृष्ठ सं० 146।
- संगीत में ताल वाद्यों की उपयोगिताएँ, डॉ० चित्रा गुप्ता, पृष्ठ सं० 146।
- मिश्र रमेश कुमार, दिल्ली घराने का संगीत में योगदान, पृष्ठ सं० 16–17।
- मा० 2 मारूलकर संगीतातील धाराणी, पृष्ठ सं० 31।
- सुशील कुमार चौबे–संगीत के घराने की चर्चा, पृष्ठ सं० 28।
- डॉ० आबान–ई०–मिस्त्री, पखावज और तबला के घराने एवं परम्परायें, पृष्ठ सं० 125।
- डॉ० योगमाया शुक्ला, तबले का उद्‌गम विकास और वादन शैलियाँ, पृष्ठ सं० 176।
- पं० विजय शंकर मिश्र, घराना एक अध्ययन, संगीत पत्रिका 204, पृष्ठ सं० 21।
- पं० सुधीर मयंकर–तबला कला और शास्त्र, पृष्ठ सं० 21।
- श्री अरविन्द, तबला, पृष्ठ सं० 231।
- विजय सिद्ध, तबला परम्परा एवं नयी दिशायें, पृष्ठ सं० 13।
- डॉ० विजय सिद्ध,तबला–परम्परा एवं नयी दिशायें, पृष्ठ सं० 24।
- गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव, ताल प्रभाकर प्रश्नोत्तरी, पृष्ठ सं० 24।
- मनोहर भालचन्द्र राव मराठे, पृष्ठ सं० 205–206।
- छोटे लाल मिश्र, ताल प्रबन्ध, पृष्ठ सं० 17।
- श्री शम्भू नाथ मिश्र, सात सुर सत्ताइस दायरे– पृ० सं० 123।
- यू टयूब से प्राप्त ज्ञान के आधार पर।.
- कुमार लाल मुखर्जी के साक्षात्कार के आधार पर।
- पार्थ सारथी मुखर्जी के साक्षात्कार के आधार पर।
- पं० विजय शंकर मिश्र, अन्तर्नादः सुर और साज पृ०सं०– 299।
- नन्दन मेहता जी के दामाद किशोर मिश्र जी से भेंटवाता पर।
- पं० विजय शंकर मिश्र, अन्तर्नादः सुर और साज पृ०सं०– 300